खंड 03 | अंक 02 | अप्रैल-जून 2025
https//nichimachal.nic.in/publication/news-letter

हिम NIC इंफोर्मेटिक्स

एनआईसी National Informatics Centre

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा एक त्रैमासिक संवाद पत्र

रोहतांग पास परमिट

रोहतांग परमिट	विशेष रोहतांग परमिट	अन्य परमिट	मनाली प्रवेश	हामटा पास
6,73,125 परमिट	40,102 परमिट	2,10,349 परमिट	23,947 परमिट	46,914 परमिट
37.03 CR एकत्रित राशि	2.20 CR. एकत्रित राशि	1.05 CR. एकत्रित राशि	0.51 CR. एकत्रित राशि	0.81 CR. एकत्रित राशि

स्पॉट-लाइट

रोहतांग पास 3,978 मीटर की ऊँचाई पर स्थित, भारत के हिमाचल प्रदेश में एक प्रसिद्ध पर्वतीय दर्रा है, जो कुल्लू घाटी को शुष्क लाहौल एवं स्पीती घाटियों से जोड़ता है। रोहतांग दर्रे की पारिस्थितिक संवेदनशीलता और अत्यधिक पर्यटक प्रवाह के कारण, राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एन.जी.टी.) द्वारा पर्यावरणीय क्षति को कम करने के लिए वाहनों की भीड़ पर प्रतिबंध लगाने के आदेश के परिणामस्वरूप, यातायात को विनियमित करने तथा संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के लिए, पर्यटन विकास परिषद मनाली के लिए राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित ऑनलाइन परमिट प्रणाली लागू की गई है।

परमिट के प्रकार

रोहतांग पास परमिट पर्यटन गतिविधियों के लिए मनाली से रोहतांग दर्रे तक जाने वाले पर्यटकों के लिए यह परमिट आवश्यक है। दैनिक आधार पर 1200 वाहनों (800 पेट्रोल और 400 डीजल) का कोटा निर्धारित है।

विशेष रोहतांग पास परमिट यह परमिट हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले के बाहर पंजीकृत निजी वाहनों (गैर-वाणिज्यिक) के लिए वर्ष में केवल एक बार के लिए निर्धारित किया गया है। यह परमिट एक दिन के लिए मान्य है तथा दैनिक कोटा 100 वाहनों (60 पेट्रोल और 40 डीजल) तक सीमित है।

इसके अतिरिक्त, पर्यटक इसी एप्लीकेशन का उपयोग करके, हामटा पास परमिट और मनाली प्रवेश (ग्रीन टैक्स) के लिए भी आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन कैसे करें

ऑनलाइन आवेदन आवेदन करने के लिए आधिकारिक वेबसाइट https://rohtangpermits.nic.in पर जाएं। परमिट के प्रकार का चयन करने के बाद, आवश्यक विवरण भरकर ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं। परमिट की बुकिंग वर्तमान तिथि से आगामी छह दिनों तक ही की जा सकती है।

मोबाइल एप्लिकेशन रोहतांग परमिट मोबाइल ऐप, गूगल प्ले स्टोर और एप्पल ऐप स्टोर पर उपलब्ध है। यह ऐप, उपयोगकर्ताओं को दैनिक आधार पर परमिट की उपलब्धता जानने तथा पूर्व में जारी किए गए परमिट की वैधता जांचने और डाउनलोड करने की सुविधा प्रदान करती है।

आवश्यक दस्तावेज

- वैध पहचान प्रमाण (जैसे कि आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस आदि)
- वैध प्रदूषण नियंत्रण (पी.यू.सी.) प्रमाण पत्र
- वाहन पंजीकरण प्रमाण पत्र (वाहन 10 वर्ष से अधिक पुराना नहीं होना चाहिए)

राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस स्वर्ण पुरस्कार

सुखद अनुभव के लिए, विशेषकर व्यस्ततम पर्यटन काल में परमिट के लिए अग्रिम ऑनलाइन आवेदन करने की सलाह दी जाती है।

अतिथि अनुभव

सुश्री तोरुल एस. रविश, भा.प्र.से.
उपायुक्त कुल्लू, हिमाचल प्रदेश

पिछले दस वर्षों में, हिमाचल प्रदेश में रोहतांग पास परमिट प्रणाली ने पर्यटकों के साथ-साथ पर्यटन विकास परिषद मनाली को बहुत ही संतोषजनक सेवाएं प्रदान की हैं। यह प्रणाली पर्यटकों को भुगतान के आधार पर रोहतांग पास, हामटा पास आदि की यात्रा करने के लिए परमिट प्रदान करती है। सम्बन्धित अधिकारी इस वेब इंटरफ़ेस के साथ-साथ इस से जुड़े मोबाइल ऐप द्वारा भी चेक-इन और चेक-आउट प्रक्रिया की निगरानी कर सकते हैं। इस प्रणाली से फर्जी परमिट की संभावना भी समाप्त हो गई है। यह प्रणाली चयनित दिनों में आगंतुकों की सूचियों की तैयारी को सुव्यवस्थित करती है और सभी हितधारकों को एक पारदर्शी तंत्र प्रदान करती है।

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश के वैज्ञानिकों की टीम के समर्पित और श्रमसाध्य प्रयासों के साथ विकसित इस प्रणाली को, भारत सरकार द्वारा ई-गवर्नेंस 2017-18 के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार सहित विभिन्न अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इस पहल ने, हिमाचल प्रदेश सरकार की क्षमता को बढ़ाने के लिए बेहतर दक्षता के साथ-साथ पारदर्शी सेवाएं प्रदान करने का प्रयास किया। यह सॉफ्टवेयर पर्यटन विकास परिषद मनाली के साथ-साथ आम जन मानस को भी निष्पक्ष, पारदर्शी एवं सुविधाजनक सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मैं, राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित इस उत्कृष्ट सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करती हूँ।

टेक टिप्स

- डेटा भंडारण उपकरणों को रिसाइकिल करने से पहले, डेटा का सुरक्षित निस्तारण सुनिश्चित करें।
- वह उपकरण जो आपके वाई-फ़ाई राउटर से जुड़ सकते हैं, केवल उन्हीं को श्वेत-सूचीबद्ध करें।
- अपने वाई-फाई राउटर के डिफ़ॉल्ट उपयोगकर्ता क्रेडेंशियल्स को अनिवार्य रूप से बदलना सुनिश्चित करें।
- डाउनलोड करने से पहले वेबसाईट के प्रमाण-पत्र और उसके जारीकर्ता की वैधता की जांच अवश्य करें।
- अपने कंप्युटर पर किसी भी प्रोग्राम को चलाने से पहले, विश्वसनीय एंटी-वायरस सॉफ्टवेयर से स्कैन करना सुनिश्चित करें।
- कभी भी अज्ञात यू.एस.बी. उपकरणों/पेन ड्राइव आदि का प्रयोग न करें।

नवीनतम गतिविधियां

- माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश, श्री सुखविंदर सिंह द्वारा 05 जून 2025 को पर्यावरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के लिए एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित एकल-उपयोग पॉलीथीन (एस.यू.पी.) सॉफ्टवेयर तथा 'ई-चालान एचपी' मोबाइल ऐप का शुभारंभ किया गया। इस सॉफ्टवेयर तथा मोबाइल ऐप के द्वारा अधिकारी प्रतिबंधित एकल-उपयोग पॉलीथीन वस्तुओं का प्रयोग करने वाले लोगों अथवा संस्थानों का चालान कर सकते हैं तथा उल्लंघनकर्ता पेमेंट-गेटवे का उपयोग करके मौके पर ही जुर्माने का भुगतान कर सकते हैं।

- UI/UX के महत्व और लाभों को समझाने के उद्देश्य हेतु, एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग (एन.ई.जी.डी.) के सहयोग से 17 एवं 18 जून, 2025 को शिमला में सरकारी अनुप्रयोगों के लिए उपयोगकर्ता अनुभव (यू.एक्स.4जी.) विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, कोषागार तथा प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया।

- एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा 21 जून 2025 को 11 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आसन, ध्यान आदि सहित विभिन्न योग एवं व्यायाम गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

गंतव्य

चांशल पास

चांशल पास, जिसे चांशल घाटी के नाम से भी जाना जाता है, शिमला से लगभग 160 किलोमीटर दूर स्थित हिमाचल प्रदेश का एक सुरम्य स्थल है। यह स्थल हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा पर, 4,520 मीटर की ऊंचाई पर स्थित शिमला जिला की सबसे ऊंची चोटी चांशल पीक के निकट स्थित है।

चिड़गांव तथा लरोट होते हुए यह खूबसूरत रास्ता, रोहड़ू को दूरदराज की डोडरा-क्वार घाटी से जोड़ता है। चांशल पास की यात्रा केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि एक अविस्मरणीय अनुभव है। चांशल घाटी के मनमोहक और विहंगम दृश्य यहाँ आने वालों को प्रकृति के साथ एक गहरे संबंध और असीम शांति का अहसास करवाते हैं।

चांशल पास ट्रैकिंग और एडवेंचर प्रेमियों के लिए भी एक लोकप्रिय गंतव्य है। चांशल पास से चांशल झील, सारू झील और रूपिन पास आदि कई प्रसिद्ध ट्रैक किए जा सकते हैं, जहाँ से आप आस-पास की पर्वतीय श्रृंखलाओं और घाटियों के शानदार दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। चांशल पास ट्रैक शुरुआती और अनुभवी दोनों तरह के ट्रैकर्स के लिए उपयुक्त है। खासकर सर्दियों में जब क्षेत्र बर्फ से ढक जाता है, तब यह ट्रैक एक जादुई शीतकालीन स्वर्ग में बदल जाता है, और इसे हिमाचल प्रदेश के सर्वोत्तम शीतकालीन ट्रैक में से एक माना जाता है।

घूमने का उत्तम समय

चांशल पास घूमने का सबसे अच्छा समय जून के अंत से लेकर अक्तूबर तक होता है। चांशल पास तक जाने वाली सड़क मई से नवंबर तक वाहनों के लिए खुली रहती है, जिसके बाद भारी बर्फबारी के कारण यह सर्दियों में बंद हो जाती है। सर्दियों के महीनों में यह क्षेत्र एक खूबसूरत बर्फीली दुनिया में बदल जाता है, जहाँ तापमान सामान्यत: -10°C से नीचे तक चला जाता है।

कैसे पहुँचें

हवाई मार्ग चांशल पास से निकटतम हवाई अड्डा लगभग 174 किलोमीटर दूर स्थित शिमला (जुब्बड़हट्टी) है, लेकिन यहाँ से सीमित उड़ानें ही उपलब्ध हैं। लगभग 276 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चंडीगढ़ हवाई अड्डा अधिक सुविधाजनक विकल्प है, जो भारत के सभी प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

रेल मार्ग लगभग 160 किलोमीटर दूर नेरो-गेज लाइन पर स्थित, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में प्रसिद्ध, कालका-शिमला रेलवे यहाँ से निकटतम रेल सम्पर्क है। इसके अतिरिक्त, निकटतम ब्रॉड-गेज रेलवे स्टेशन लगभग 239 किलोमीटर दूर स्थित कालका है।

सड़क मार्ग चांशल पास शिमला से लगभग 160 किलोमीटर दूर है। यहाँ से रोहड़ू और लरोट होते हुए टैक्सी या सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग करके चांशल तक सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है।

टेक अपडेट

माइक्रोसर्विस: सॉफ्टवेयर विकास चक्र का आधुनिक दृष्टिकोण

माइक्रोसर्विस, सॉफ्टवेयर विकास की एक वास्तुशिल्पीय शैली है जिसमें किसी सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन को छोटी-छोटी एवं स्वतंत्र सेवाओं (Services) के रूप में संरचित किया जाता है, जो किसी विशेष व्यावसायिक कार्य को संभालती हैं। यह पारंपरिक मोनोलिथिक आर्किटेक्चर से बिल्कुल भिन्न है, जिसमें पूरी सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन को एक ही इकाई के रूप में विकसित और प्रबंधित किया जाता है।

प्रत्येक माइक्रोसर्विस, पूरी प्रणाली में एक विशिष्ट कार्य के लिए उत्तरदायी होती है जो अन्य सेवाओं के साथ ए.पी.आई. या मैसेजिंग सिस्टम के माध्यम से संचार करती है। इस डिज़ाइन-पद्धति से अलग-अलग टीमों को स्वतंत्र रूप से काम करने, सेवाओं के स्वतंत्र रूप से परिनियोजन/डिप्लॉय करने और आवश्यकता अनुसार स्केल करने की सुविधा मिलती है।

माइक्रोसर्विस का सबसे बड़ा लाभ स्केलेबिलिटी है। किसी भी सेवा को उसकी आवश्यकता के अनुसार स्केल किया जा सकता है, जिससे न्यूनतम संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग के साथ, उपयोगकर्ताओं को कुशल सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक सेवा की आवश्यकता के अनुसार सर्वोत्तम प्रोग्रामिंग भाषा और डाटाबेस का उपयोग भी स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।

माइक्रोसर्विस आर्किटेक्चर, फॉल्ट आइसोलेशन (पृथक्करण करके त्रुटियों को सीमित रखने) में भी सहायता प्रदान करता है। यदि किसी एक सेवा में कोई अवरोध आता है, तो भी पूरी प्रणाली प्रभावित नहीं होती। यह सिस्टम की विश्वसनीयता और उपलब्धता को बढ़ाता है और यह वास्तुशिल्पीय शैली, DevOps और CI/CD (Continuous Integration/Continuous Deployment) जैसी आधुनिक सॉफ्टवेयर प्रथाओं के अनुकूल भी है।

माइक्रोसर्विस पद्धति अपनाने में, बहुत सारी सेवाओं के प्रबंधन करने से परिचालन जटिलता तथा सिस्टम की वितरित प्रकृति के कारण नेटवर्क विलंबता/लेटेंसी भी बढ़ जाती है। यद्यपि, इसके लिए सावधानीपूर्वक योजना और, बुनियादी ढांचे और स्वचालित परीक्षण की आवश्यकता होती है, लेकिन तेजी से विकसित हो रहे डिजिटल परिदृश्य में इसके लाभ प्राय: इन हानियों से अधिक होते हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद भी, माइक्रोसर्विस बड़े पैमाने के अनुप्रयोगों और डिजिटल परिवर्तन प्रयासों के लिए पसंदीदा पद्धति बन गई है। नेटफ्लिक्स, अमेज़न और उबर जैसे बड़े संगठन माइक्रोसर्विस पद्धति का उपयोग करके अत्यधिक स्केलेबल एवं लचीले सिस्टम बना रहे हैं जो आज के डिजिटल युग में नवाचार और विकास का आधार बन चुका है।

मोनोलिथिक आर्किटेक्चर

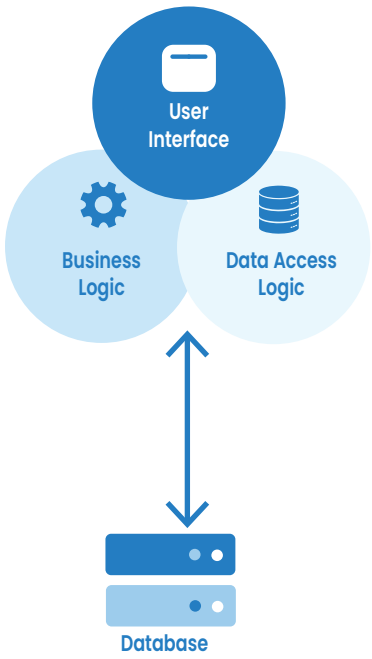

माइक्रोसर्विस आर्किटेक्चर

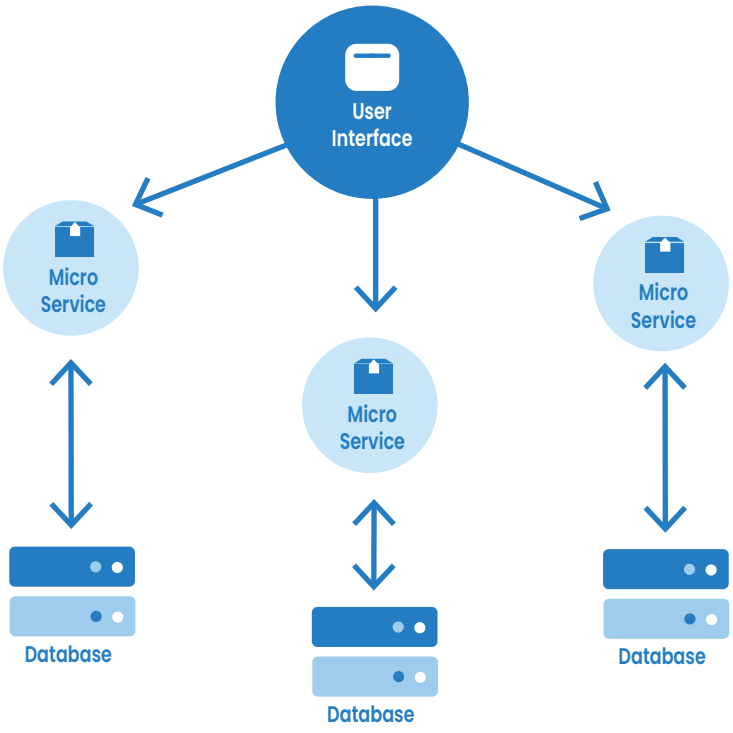

7. फॅमिली कनैक्ट

श्री प्रशांत कुमार, श्री चेतन सैनी, श्री चन्द्र शेखर तथा श्री सुकक्ष सिद्धपुरी ने एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक अधिकारी/इंजीनियर-एस.बी. के रूप में अपना नया पदभार ग्रहण किया। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश इन सभी अधिकारियों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

श्रीमती वंदना सांख्यान (वैज्ञानिक – सी) तथा श्री सवेतांश शतक (वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक-बी), एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में अपनी बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान करने के उपरांत एन.आई.सी. केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के लिए स्थानांतरित हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, श्रीमती वंदना सांख्यान एवं श्री सवेतांश शतक के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

श्री विमल कुमार शर्मा (वैज्ञानिक – एफ) तथा श्री संजीव कुमार (वैज्ञानिक – सी), एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में अपनी बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान करने के उपरांत, सरकारी सेवा से अधिवर्षिता पर 30 अप्रैल 2025 को सेवानिवृत्त हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, श्री विमल कुमार शर्मा तथा श्री संजीव कुमार को सुखद, स्वस्थ एवं आनंददायक सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

परामर्श: श्री अजय सिंह चैहल

संवाद पत्र टीम

मुख्य संपादक: श्री विनोद कुमार गर्ग
संपादक: श्री अखिलेश भारती, श्री बृजेन्द्र कुमार डोगरा
डिजाईन एवं रचनात्मक कलाएं: श्री सर्वजीत कुमार

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र
हिमाचल प्रदेश राज्य केन्द्र, छठी मंजिल, आम्सडिल बिल्डिंग
हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश - 171002
sio-hp@nic.in +91-177-2624045 https://nichimachal.nic.in

**हम प्रयास के लिए उत्तरदायी हैं,
न कि परिणाम के लिए।
भगवत गीता**

योगदानकर्ता
श्री ब्रिजेन्द्र कुमार डोगरा
श्री दीपक कुमार
श्री प्रशांत कुमार

अस्वीकरण: लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, और लेखों में निहित तथ्यों एवं सूचना की सटीकता की जिम्मेदारी लेखकों की है।